श्री कृष्णायण धर्मार्थ ट्रस्ट

1

पञ्च तत्व का पिंजरा, दारा, सूत, और आप !
अपने मन मैं मान लिया, पुत्र पति और बाप !!

2

राम भजन सार है भाई !
जगत मनन महा दुःख दाई !!
जो एक बार भजन रस पीवे !
कमल की तरह जगत मैं जीवे !!
होई असंग जगत मैं जावे !
आवागमन फ़िर कबहू न पावे !!

3

अजब तमाशा अजब तमाशा अजब तमाशा देखते रहना !
देख तमाशा बाहर से अन्दर से द्रष्टा ही रहना !!
देख विचित्र रंग जगत के, मत तू उनमें मोहित होना !
परम आनंद जब ही पायेगा अंबर छत हो धरती बिछोना !
हाथ पात्र उदर कमंडल, नीर नदियों का पीना !
ले आनंद आनंद घन को, तब तुझ पर आएगा जीना !
हो अवधूत जगत मैं विचरो , इससे निचे कभी मत रहना !
होश संभल सुनील अब अपना , अब गफलत मैं एक पल न रहना !

४

मेरी भी इच्छा है, कब चिड़िया घर बनाएगी सर पर !
मेरी भी इच्छा है, कब फिरूं असंग हो धाम धरा पर !!
मेरी भी इच्छा है, कब एक होऊं मिटटी की गंध से !
मेरी भी इच्छा है, कब एक होऊं व्योम पवन से !!
मेरी भी इच्छा है, कब एक होऊं अमृत सिन्धु से !
मेरी भी इच्छा है, कब एक होऊं व्योम बिन्दु से !!
मेरी भी इच्छा है, कब खाल गलेगी मेरे इस तन से !
मेरी भी इच्छा है, कब बास आयेगी मान और धन से !
मेरी भी इच्छा है, कब शरीर मिटेगा बिना कफ़न के !
मेरी भी इच्छा है, कब प्राण निकलेंगे ब्रहम रन्ध्रह से !!
कहे क्रिशन दास, जब तू सब इच्छा को त्यागे !
तभी तुझे मिलन होगा अपने प्रियतम जी से !!

5

आज तो सबकुछ बदला-बदला सा लगता है !
आज तो सबकुछ नया-नया सा लगता है !!
मैं तो डरता था यहाँ आने के लिये !
अब तो यहीं रम जाने को लगता है !!
न मन की खटपट, न संसारी झंजट !
न क्रोध की गर्मी, न राग की नरमी !
न विषयों की चाह, न ममता की आह !!
न ईश की राह, न दर्शन की चाह !!
अब तो बस, एक ही हो जाने को लगता है ! आज तो सबकुछ.................................
न प्रारब्ध की आस, न विषयों की बास !
न शरीर ही खास न मिलने की आस !!
न तीर्थों की खाक, न जंगल में निवास !

न रिश्तों की बात, न कर्मो की लात !!

अब तो अमृत में डूब जाने को लगता है !आज तो सबकुछ................................

न ज्येष्ठ की गर्मी, न फूस की नरमी !

न बिजली की चमक, न बादल की धमक !!

न जागृत का दुःख, न सुसुप्ति का सुख !!

न मिलने का सुख, न बिछुड़ने का दुःख !!

अब तो बस मिट जाने को लगता है !आज तो सबकुछ................................

न शास्त्रों का वाद, न सम्प्रदाय विवाद !

न शुन्य का खंडन न वेदांत का मंडन !!

न सत्संग में राग, न विषयों में वैराग !

न जीने की इच्छा, न मरने का भय !!

अब तो बस मर जाने को लगता है !आज तो सबकुछ................................

न मुझ में ठंडक, न मुझमें तपन !

न कोई संग, न मैं असंग !!

न द्रश्य का रंग, न द्रष्टा का ढंग !

न मुझ में ज्ञान, न मुझ में अज्ञान !!

अब तो बस शांत हो जाने को लगता है !आज तो सबकुछ................................

न मुझ में द्वैत, न मुझ मैं अद्वैत!

न शास्त्रों का बंधन, न दुई का दर्शन !!

न में ब्रहम , न में जीव !

न मुझ में मुक्ति, न मुझ में बंधन !!

अब तो ख़ुद को कृष्ण मय बनाने को लगता है !आज तो सबकुछ................................

६

वही मैं हूँ

परे जो नाम रूपों से वही मैं हूँ वही मैं हूँ !

जो सृष्टा सभी नामो का, जो दृष्टा सभी रूपों का!

परे जो नाम रूपों से वही मैं हूँ वही मैं हूँ!!

न जिसमें जागृत का संसार, न स्वप्न का व्यवहार !

परे जो तमोमयी सुसुप्ति से वही मैं हूँ वही मैं हूँ !

जहां ना सत्व की शान्ति, न तमो की भ्रान्ति !

जो साक्षी है रजोगुण का, वही मैं हूँ वही मैं हूँ !

जो निर्दोष बचपन भी देखे, अंधी जवानी को भी जो देखे !

जो देखे लाचार बुढापे को, वही मैं हूँ वही मैं हूँ !

जो देखे भविष्य को, जो देखे सारे भूतों को!

जो है वर्तमान का साक्षी,वही मैं हूँ वही मैं हूँ !!

जो दृश्य को देखे, जो जाने दृष्टा को भी!

जो दर्शन का हो साक्षी , वही मैं हूँ वही मैं हूँ !!

जो देखे सब कामनाओं को,जो देखे क्रोध को आता !

जो है लोभ का साक्षी, वही मैं हूँ वही मैं हूँ !!

जो जाने सब रागों को, जो देखे सभी द्वेषों को!

जो साक्षी है मम्त्वों का, वही मैं हूँ वही मैं हूँ !!

जो समाधी में भी दरशे , जिसका अनुभव हो तुरीय में !

जो रहे सदा शान्ति में , वही मैं हूँ वही मैं हूँ !!

न जिसको हो कभी भ्रान्ति, न मांगे कभी शान्ति !

न फीकी हो कभी कांति, वही मैं हूँ वही मैं हूँ !!

जो मिल जाए दृश्य के साथ, दुःख पाए दिन और रात !

साक्षी कृष्ण है सबका, वही मैं हूँ वही मैं हूँ !!

न जहाँ, हो कोई प्रशन, बचे एक ही उत्तर
उत्तर सभी प्रश्नों का, एक में हूँ एक में हूँ
एक में हूँ एक में हूँ
एक में हूँ एक में हूँ
एक में हूँ एक में हूँ एक में हूँ एक में हूँ...

7

अनुभव की उपेक्षा मत करो, अनुभव से लो सीख !
शरण जाए अनुभवी की, परमातम जाए दीख !!

8

संभल के जाना जगत में भइया, यहाँ भ्रान्ति पग-पग आती है !
जैसे मंद प्रकाश में रज्जू , सर्प बन डराती है !!
कारण को तू खोजना, कार्य में बुद्धि बदल सी जाती है !
जैसे सीपी सूर्य प्रकाश में , चांदी बन ललचाती है!!
आँख लगते ही स्वप्न में ,गर्दन झट कट जाती है !
मृगमरुचिका में भटकत फिरता प्यास नही बुझ पाती है !!
नाव पर सवार को दुनिया चलती नजर सी आती है !
पीलिया के रोगी कुं दुनिया , पिली सी बन जाती है !!
बिन कारण निश्चय कीये ते, लकड़ी भुत बन जाती है !
बिना कृषण की शरण में जाए , दुनिया पल-पल तडपाती है!!

9

(टेक - अब तुम दया करो जगदीश जी सब विश्व बनाने वाले)

मानुष जनम है ये अनमोल, बतावें वेद जानने वाले !
याहे खाए पीव बरबाद करो, चाहे, ध्यान लगा उद्धार करो!
चाहे ब्रह्म जान आबाद करो, कहे ब्रह्म जानने वाले ! मानुष जनम है........
चाहे शास्त्र विचारे ज्ञान करो, चाहे, विषयन में कुर्बान करो !
चाहे सद्गुरु शरण में कल्याण करो, कहे शरण में जाने वाले! मानुष जनम ......
पञ्च तत्व का खेल बनाया, या में तू क्यों इतराया !
तू खेल में न फंस जाना , ये बोलें, खेल देखने वाले ! मानुष जनम है........

10

(छंद)

चार कृपा कही हैं संतन ने, ईश कृपा कुं प्रथम बतावें !
जनम दियो मानुष तन पायो, नित्यानित्य विवेक पिछाने !
हाथ दिए हैं दान करन कुं, पैरन ते तीर्थ कुं जावें !
नयन दिए है शास्त्र पढ़न कुं , कान नित हरी कथा सुनावें !!
मुख सों हरी का गान करो, हिर्दय में जगदीश्वर कुं ध्यावें !
फिर भी कृपा कुं जो समझत नाहीं ,वा है पशु सब शास्त्र बतावें !!
दूजी कृपा कहूँ कान लगा सुन, शास्त्र कृपा कुं पंडित गावें !
इतिहास पुराण रामायण ते, भक्त चरितन सों हेत लगावें !!
भक्ति बढे प्रिय ईश्वर की फिर, गीता भगवत से चित लावें !
निश्चय स्वरुप को जब ही होबे, तब आवागमन ते पिंड छुडावें !
बोध न होवे विवेक बिना, विवेक कुं तो वेदांत ते बढावें !!
वेदांत न समझे गुरु बिना, वेदांत मरम तो गुरु ही जाने !
मरम समझन शास्त्रण को , तीसरी गुरु कृपा कुं संत बतावें!
जो शरधा करे गुरु उपदेशन पे, भवसागर कुं सहज तर जावें !
सफल करण मनुस जनम कुं, चौथी कृपा निज की ही बतावें !
निज किरपा सों मिलकर तीनों, चौथे पुरसार्थ मोक्ष कुं पावें !
कहे सुभाष , सुनील ये कृपा, बिन सदगुरु के समझ न आवें !

श्री कृष्णायण धर्मार्थ ट्रस्ट

OFFICE:- 178 - BANNU ENVLAVE, PITAM PURA NEW DELHI - 110034